

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्हीम

कुल्लु नइसीन आरुकुतुल मौत. (कुआन)

हर नइस को मौत का मऊा राभना होगा.

मसाएले मैयत

कुआन और अहादीसे सहीहा की रोशनी में

— मुअदिलह —

मौलाना अकबर अली 'असरी'

कया रसूल्लाहे सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम
अल्ला कुमाला आकशा ईल्ला अकशुल आभिरा (बुजारी)

कपी सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लमने इरमावा
“अय अल्लाह किंटी तो सिई आभिरत की ही है” (बुजारी)

— नासिर —

ISLAMIC INFO. CENTER - BHUJ

C/o. पप्पुभाई, आनंद हेर आर्ट, डांडा बजार,
लुख-528. (390 009) Mob.: 98796 71123

इलासिक प्रिन्टर्स-लुख-62247 30606

नमः

कुछ धंसकी जलर भी है तुजको
 वो सोख रहण्णम क्या होगा ?

जुस आगका धंधन धंसां हो
 उस आगका आलम क्या होगा ?

जब धुधर गलेका का बोलेगा
 और सांस का डोरा टूटेगा

जब जब जियेगी रग रग से
 उस पकत का आलम क्या होगा ?

ये ज्जुस्म गवाही भुट टेगा
 हर हिस्सा ज्जुस्मका बोलेगा

जामोश जबां हो जायेगी
 उस पकत का आलम क्या होगा ?

अक बार जता हो जाये अगर
 सो बार अटलसे तोला कर

अक अशक यहाँ का बेहतर है
 यहाँ गीरीयो पैहम क्या होगा ?

ये हाल है 'रमजु' दुनिया का
 दुनिया में कीसीका कोय नहिं

धंस टहर का जब ये आलम है
 तो हत्र का आलम क्या होगा ?

इंहरिस्ते मऊमीन

नं.	मऊमीन	सङ्ग नं.
१	गांङनी (सङ्घात) से लेकर ३६ ङङ्गे होने तक का अर्थान	०३
२	मैयत को गुसल देने का तरीका	०७
३	इङ्गल का अर्थान	०७
४	मर्दों का इङ्गले मरनुज (सुण्णत) का अर्थान	०८
५	मर्दों को इङ्गलाने का तरीका	१०
६	औरतो का इङ्गले मरनुज (सुण्णत) का अर्थान	१०
७	औरतो को इङ्गलाने का तरीका	११
८	जनाङ्गा उठाने का और उठके साथ चलने का अर्थान	११
९	नमाङ्गे जनाङ्गा का अर्थान	१३
१०	नमाङ्गे जनाङ्गा पण्डने का तरीका	१४
११	नमाङ्गे जनाङ्गा की दुआओं	१६
१२	इङ्ग पर नमाङ्गे जनाङ्गा और गाओलाना नमाङ्गे जनाङ्गा का अर्थान	१७
१३	इङ्ग और इङ्गल का अर्थान	१८
१४	ओहले मैयत के चङ्गां जाना लेङ्गने का अर्थान	२२
१५	ताङ्कियत (टीलासा) देने का अर्थान	२२
१६	इङ्गों की ङ्कियारत का अर्थान	२३
१७	इङ्गों की ङ्कियारत के आद्यज और दुआओं	२४
१८	इंसाले सवाज का अर्थान	२६
१९	तङ्कसीमे पिरासत	२८

अर्जे मुखल्लिइ

अस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बुल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सैयदिल मुसलीन वआला आलिही व अस्हाबिही अजमर्धन.

अम्मा जाट हर मुसलमान मर्द और औरत के लीये ऋइरी है कि वह अपने तमाम टिनी-प-दुव्यपी मुआमलात-प-धर्मादात में अल्लाह सुब्हानहु व तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के अहकामात की पाबंदी करे. यह मुभ्तसरसा किताबया जनाम 'मसाधले मैसत' जो आपके हाथो में है, धंसमें ज़ांकी (सकरात) से लेकर धंसाले सपाब और तकसीमे पिरासत तकके तकरीबन सब मसाधल अहादीसे सहीहासे साभित करनेकी बरपुर कोसीस की गध है. ताकी अपाम कइन और दइन वअैरह सुन्नते नजवी सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के मुताबिक अंजाम ट शके.

में शुक्र गुजर हुं अपने उन तमाम लाधर्योका जिन्होने धंस किताब को शाअेअ करने में हर तरह से हिस्सा लीया है.

आजिर में अल्लाह रब्बुल आलमीन से हुआगो हुं की ये किताबया हमारे और हमारे वालिदैन और शाअेअ करने वाले तमाम मुआपिनीन (मदद करने वाले) के लीअे सद्क अे ऋरीया साभित हो. आमीन....

रब्बना तकब्बल मिन्नं। धंज्जक अन्तस समीउल अलीम.

मोहताजे हुआ
अकबर अली 'असरी'
लइय (गुजरात)

(१) शंकनी (सकलत) से लेकर इह इकल होने तकका अचान.

जब कोय शकस मरने के करीब हो तो ये सुन्नत है की उसे किल्ला की तरफ मुतपजजेह करे, या'नी दाहनी करपट पर इस तरहा सिटाटे कि उसका मूह किल्ले की तरफ हो जावे. अगर किल्लाकी तरफ मुतपजजेह करने में मरीऊ को तकलीफ हो तो डीर जिस हालत में हो उसी हालत पर छोड दे.

उसको कलिमाये "लाइलाहा इल्लेलाह" की तलकीन करे या'नी उसके पास बैठकर ये कलिमा न आवाजे जुलुट पणहे ताकि वो उसे सुने और ये कलिमा उसको याद आ जावे और वोह ली पणहने लगे. अगर तलकीन करनेवाले को याहिये की ठकर ठकर कर इतिमान के साथ पणहे, लगातार टेर तक न पणहे और न थिल्ला कर शोरो गुल के साथ पणहे, क्युंकि मरीऊ पर शंकनी का पकत निहायत नाजुक होता है. ऐसा न हो की वो तंग आकर कही खजान से कोय नाजेजा भात निहाले, या उसके टिल को इस कलिमासे नकरत हो, या इन्कार कर बैहे.

मरीऊ जब ओक बार "लाइलाहा इल्लेलाह" केह दे तो डीर मजुद तलकीन की जरूरत नहिं, हां अगर डीर इस कलिमा के पणहने के बाद कोय दूसरी भात कहे डीर से तलकीन करना याहिये. ताकि मरीऊ इस कलिमा को डीर से कहे और उसका आपरी कलिमा "लाइलाहा इल्लेलाह" हो.

इकरत मुआऊ (रफि.) से रिवायत है कि इरमाया रसुलुल्लाह सल्लेलाहु अल्यहि व सल्लेम ने कि जिस शकस का आभिरी कलाम "लाइलाहा इल्लेलाह" हो वो जन्नत में दाजिल होगा. (अबु दाउद)

इकरत अबुऊर (रफि.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लेलाहु अल्यहि व सल्लेम ने इरमाया कि जिस शकस ने "लाइलाहा इल्लेलाह" कहा डीर उसी पर मर गया तो वो जन्नत में दाजिल होगा. (मुस्लिम)

जांडनी के पकत मरीऊ के पास सूरः यासीन का पण्डना कीसी सहीह हदीस से साबीत नहिं है.

जब मरीऊकी इह कब्ज हो जाये तो उसकी आंभे नंद करटी जाये, और हाथ पैर सीधे कर दीये जाये और तमाम नदन कपणसे ढांक दीया जाये. मैयत के लिये और अपने लीये दुआये अस्तग्यार करे और कोय नाउंजा कल्मा उज्जानसे न निकाले क्युकि एस पकत जो कुछ कहा जाता है इरिश्ते उस पर आमीन कहते हैं.

हजरात उम्मे सलमा (र.क.) से रिपायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम अबू सलमा (र.क.) के पास आये और उनकी आंभे भुली रह गयी थी उनको नंद कर दीया और इरमाया के जब जान निकलती हे तो आंभ उसके पीछे लगी रहती हे. और जब लोगोंने उनके घरमे रोगा शुड कर दीया तो आप सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लम ने इरमाया अपने लिये अरखी ही दुआ कये एस लीये कि इरिश्ते आमीन केहते हैं तुम्हारी दुआओं पर. फिर आपने दुआकी "अल्ला हुम्भगफिरसि अनी सलामता वरकअ ददजतहु इल महदिसवीन वभलुइ हु इ अकि जिही इल गाभिरीन वगिर लना व लहु या रब्जल आलमीन वइसह लहु इी कभरिही वनपिर लहु इीह".

तर्जुमा : - या अल्लाह तु अबू सलमा को नज्श दे और भुलन्द कर उनका दरजा हिदायत पालोमे, तु भलीइ हो जा उनके नाकी रहनेवाले अजीजोंमे, और नज्शदे हमको और या रब्जुल आलमीन कुशादा कर उनकी कल्ल और रोशनी कर उसमे (भुजारी/मुस्लिम).

इह कब्ज हो जाने केबाद अहले मैयत को ली यह दुआ पण्डनी याहीये और उसमे नज्जये अनी सलमा के अपनी मैयत का नाम लेना याहीये. मसलाने मैयत का नाम अब्दुल्लाह है तो सुं कहेना याहीये :

अल्लाह हुम्मागिरसि अण्डिल्लाह परश्अ दरजतहु.....
आभिर तड.

मोतके सटमे के पकत सन्न करना चाहीये और वे हुआ
पण्हनी चाहीये “**धन्ना सिल्लाहि वधन्ना धलचहि यण्डिन.**
अल्लाह हुम्मा अजुरनी ई मुशीबती वअनलिइति जेरम
मिन्हा”. (मुस्लिम)

तर्जुमा : - हम सब अल्लाहकी मिलकीयत है और हम सब
उसकी तरफ लौटने वाले है. या अल्लाह तु मुझे मेरी धंस
मुसीबतका सवाब दे ओर मेरे लीये उसके बदलेमे उससे
अच्छी धनायत करमा. (मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलचहि व सल्लम ने इरमाया जब
किसी मुसलमान को कोध मुसीबत पहुँचे और वो वेह हुआ
पण्हे तो अल्लाह तआला उसको उससे जहेतर जटला देता है.
(मुस्लिम)

मेयत पर नोहा (मातम) करना और जेरसे रोना जणा
मुनाह है. इतरतन अहिस्ता अहिस्ता रोना और आंसु बहाना
मना नहि. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलचहि व सल्लमने
इरमाया कि मुर्दा पर अजाब होता है उसके घरवालों के उसपर
नोहा करने ओर जोर जोर से रोनेकी वजह से.
(जुजारी/मुस्लिम)

अबू मुसा अशअरी (रजि.) से रिवायत है कि इरमाया
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलचहि व सल्लमने मे उस शण्स से
नेजार हुं जो मुशीबत के पकत सर भूँडाओ और थिल्लाकर रोये
और कपणों को काँडे (जुजारी/मुस्लिम)

अण्डिल्लाह धन्ने मस्टुए (रजि.) से रिवायत है की

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया जो शाफ्स जालो पर धप्पण मारे और अरेबान इाने और कुफ़ की बाते बडे वो हममें से नहिं. (बुजारी/मुस्लिम)

मेयत पर तीन दीन से जयादा गम करना जाईळ नहिं अलजता औरत अपने शौहर की मौत पर चार महिना दस दीन तक ईदत गुजारेगी फिरमे जेजो-जीनत से परहेळ करेगी. (मुस्लिम)

जब इह कब्ज हो जावे तो डौरन तजहीळो तकडीन (कइन-दइन) का ईन्तेजाम करना याहीअे.

हुसैन ईब्ने पहुंच से रिपायत हे की तलहा ईब्ने भरराअ भिमर हुअे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उनकी ईवाहत (तजीयत देभने) को आये जा'द उसके आपने इरमाया अगर तलहा का ईन्तेकाल हो जाये तो जबर दे मुजको उनके मरने की और जलदी करो उनकी तजहीळो-तकडीन (कइन-दइन) मे ईस पारते की मुसलमानकी लाश को उसके लोगो मे रोकना मुनासिब नहिं. (अबु दावुद)

अगर कोई रातको मरे और रातहीको तजहीळो-तकडीन ओर नमाळे जनाळा हो सके तो रातहीको दइन करई, दिनका ईन्तेजार न करे रातको मुईको दइन करना सहीह हदीससे साबित हे. अबूअक (रडि.) रातहीको दइन कीये गये. (बुजारी). हजरत इातिमा (रडि.) रातहीको दइन की गयी थी. अलजता अगर रातके पकत तजहीळो तकडीन ओर नमाळे जनाळा न हो सके तो दिन का ईन्तेजार करना याहीये कसबतदारो ओर दोस्त-प-अहबाब को तजहीळो तकडीन ओर नमाळे जनाळा मे शरीक होने के लिये जबर देना जाईळ हे. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने सहाबा (रडि.) को और सहाबा (रडि.) ने बाहम अेक दुसरे को मौतकी जबर दी हे.

(२) मेयत को गुसल देनेका तरीका

मेयतको गुसल देनेका र्थाद्य करे तो उसके कपणे उतार दे मगर बदनका जितना हिस्सा छिन्दगी कि हालतमें छुपाना जरूरी है उसको ने पर्दा न करें. फिर हाथोंमें कपणा लपेट कर उसका धरिस्तंभ कराये और बदन पर कही नजासत होतो उसकोभी साफ़ करे. फिर पुत्रु कराये ओर सर और दाण्हीमें बाल होंतो साफ़ करनेवाली चीज़ (साबुन वगैरह) से धोये. अगर मेयत औरत की हो तो उसके सरकी चोटीयों को जोलकर उसका सर धोये. फिर तीन बार पानी ओर (जेरी) जोरकी के पत्तोंसे गुसल दे. आभरी बार पानी में काकुर (कपूर) मिलाये, अगर तीन बारसे ज्यादा गुसल जरूरत मअलूम होतो पांच गुसल दें, या पांच बार से भी ज्यादा, मगर ताक (अेडी संख्या) होना चाहिये. गुसल देनेमें दाहनी (जमली) तरफसे शुरुअ करे.

उम्में अतिव्या (रुज्ज.) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी बेटी को निहला रही थी उसी वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तसरीफ़ लाये और इरमाया नहलायो तीन बार, या पांच बार, या उससे ज्यादा, अगर तुम मुनासीब जानो, पानी से ओर जेरी के पत्तों से, ओर डालदो आभरी गुसलमें काकुर या इरमाया थोडासा काकुर. (बुजारी/मुस्लिम)

ओर अेक रिवायत में है कि दाहनी तरफसे पुत्रुकी जगहोंसे शुरुअ करे (बुजारी).

नरमी ओर आहीस्तगीसे गुसल दें ओर मेयत की कोय़ मक़र्रह ओर मअयुब (अेबवाली) जात मअलूम होतो उसको छुपाये ओर किरसीसे जाहिर न करें ओर जिस मक़ाम पर गुसल दें वहां पर्दा करलें.

(३) कइनका जवान

मेयतने अगर कुछ माल छोणा है तो सबसे पहले उससे उसकी तजहीज़ व तकईन की जायेगी. अगर धंस कटर माल

छोणा हे कि उससे कइने मरनुन हो सकता है तो कइने मरनुन या'नी कि अगर मैयत मर्त होतो तीन कपणे ओर औरत होतो पांच कपणे देना याहीये. अगर इस कइर माल नहिं छोडा है तो तीन ओर पांच डी कोइ केंद नहिं है, दो कपडे हो शके तो दो ही काडी है, अेक कपडा हो शके तो अेक ही काडी है. जल्के जरूरत के पकत अैसे कपणोमें ली कइनाना जाईज है जो इस कइर लंबा न हो के मैयत के पुरे कइ को छुपाअे. अैसी सुरतमें सरडी तरफ कइनाना याहीअे, और पैरोकी तरफ से ईजागीर से (जो अेक भुशुदार घास है और अरब में होती है) या डीसी ओर घास से छुपा देना याहीये. हजरत अब्दुर्रहमान जीन ओइ (रफि.) से रिवायत है की जंजे उहद में हजरत मुशयब ईब्ने उमैर शहीद हुअे तो उनके कइन के वास्ते कोइ कपणा नहिं मीला मगर अेक अैसी चादर थी की उससे हम लोग उनका सर छुपाते तो पैर भुल जाता और पैर छुपाते तो सर भुल जाता, तो नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि हम लोग उनका सर छुपाअे और पैरो पर ईजागीर डाल दे. (बुजारी)

उम्मुल मुअमिनीन हजरत आइशा (रफि.) इरमाती है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को तीन सईद कपणो में कइन टीया गया. जो 'सुहुल' के जने हुअे थे (सुहुल यमन में अेक जगह का नाम है) जो सुती थी उनमें न कुर्ता था न अमामा. (मुस्लिम)

ईब्ने अब्बास (रफि.) से रिवायत है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया पहनो अपने कपणो में से जो सईद रंग हो, इस लिअे की वो सब कपणो में से जहेतर है, और कइन दो इसी में से अपने मुई को. (तिरमिडी/अबुदाउद/ईब्नेमाजा) (ये रिवायत जईक है) इस हदीससे मअलूम हुआकि कइन सईद होना जहेतर है.

हजरत जाबिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया जब तुम में से कोइ अपने लाइ को कइन दे तो अरछा कइन दे. (मुस्लीम)

अरछे कइन से मतलब ये है कि अदद (संख्या) और तुणो अर्ब (लंबाई-चोणाई) में कामिल (पूरा) और सुन्नत के

मुताबिक हो. कीमतमें अपसत (दरम्यानी) दरजे काहो, पाक साइ हो और सातिर (सतरको छुपानेवाला) हो. अरखे कइन से ये मतलब नहि के जयादा किमत का हो क्युंकि जयादा कीमती कइन टेने की मुमानियत आइ है. हजरत अली (र.अ.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से मेने सुना है आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम इरमाते थे कि कइनमे जयादती मत करो. या'नी जयादा कीमती कइन मत हो, इस लिये कि कइन जहोत जल्ल भराब हो जाता है (अबू दापूद). कइन के पास्ते नया कपणा ऋइरी नही है पुराने और मुस्तअमल (इस्तिमाल किये हुये) कपणोंमे ली मुदोंको कइनाना जाइज और दुरस्त है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अपनी जेटी हजरत उैबन (र.अ.) के कइनमें अपना मुस्तअमल (इस्तिमाल किया हुआ) तेहजन्ट दिया था.

(४) मदों के कइने मस्नुन का जयान

मदों के पास्ते कइने मस्नुन तीन कपणों या'नी तीन यादरे हैं जो इस कदर लम्बी ओर योणी हो कि उसमे मैयतको भुज अरखी तरह लपेट सकें. ताकि पह सर से कदम तक छुप जाये. हजरत आइशा (र.अ.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तीन कपणोंमे कइनाये गये. जो सुइद थे और मकामे सुहुल के बुने हुअे थे और सूती थे जिनमें न कुर्ताथा न अमामा. (बुजारी/मुस्लिम)

जामेअ तिमिज़ी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के कइन के जारे में मुफ्तसिइ रिवायतें आइ हैं. तमाम रिवायतोंमें हजरत आइशा (र.अ.) की ये रिवायत जयादा सहीह है. और अकसर सहाबा (र.अ.) का इस पर अमल है.

जहरहाल सवाल ये है कि मदोंको तीन लीइइमे कइनाना अइजल है या कुर्ता, इज्जार और लीइइमें? पाउंहे हो कि मदोंको तीन लीइइही में कइनाना अइजल है. क्युंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तीन लीइइही में कइनाये गये थे.

(प) मर्दोंके कङ्काने का तरीका

कङ्काने से पहले मर्दोंके सर, दाण्ही और कङ्काने 'हुनुत' लगाना चाहिये. ('हुनुत' एक मुस्ककण जूशू का नाम है जो पास मुर्दों के बदन और कङ्काने के वास्ते बनाई जाती है). अगर हुनुत मयबूद न होतो धतर या और कोई जूशू धरितमाल करना चाहिये.

मर्दको तीन लीङ्काइ में कङ्काना होतो उसका तरीका ये है कि तीनों लीङ्काइ को एक दूसरे पर बीछायें, फिर मैयत को धन पर चीत सिटायें, फिर उपरका लीङ्काइ दाहनी तरफ को लपेटें, ताकि कङ्काने लपेटना दाहनी तरफसे शुरू हो, फिर बांछ तरफको लपेटें, फिर धसी तरह बाकी दोनों लीङ्काइ को लपेटें.

अगर मर्द को कुर्त और लीङ्काइमें कङ्काना हो तो उसका तरीका ये है कि पहले लीङ्काइ बीछायें, फिर उस पर धजार बीछायें फिर मैयतको पहले कुर्ता पढेनाकर धजार लपेटें फिर लीङ्काइ लपेटें, फिर सर और पेर कि तरफ गीराह (आंठ) दें.

(ङ) औरतों के कङ्काने मरनुन का बयान

औरतों के वास्ते कङ्काने मरनुन जो पांच कपणें हैं वो ये हैं तेहबन्द, कुर्ता, निमार जिसको दामनीली कहते हैं, या'नी सरबन्द, और दो लीङ्काइ या'नी कि दो चादरें.

लैला भिन्ते कानिइ सकइय्या (रफि.) से रिवायत है कि मे ली उन औरतों में थी जिन्होंने गुसल दिया था उम्मे कुत्सुम (रफि.), रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयाहि व सल्लमकी साहबजादी, को जब उनका धन्तकाल हुआ था तो कङ्काने के कपणोंमेंसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयाहि व सल्लम हमको धजार दी, फिर कुर्ता दिया, फिर सरबन्द दिया फिर चादर दी, फिर एक कपणा दिया जो उपर लपेट दीया गया. लैला (रफि.) ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयाहि व सल्लम दरवाजे पर बैठे ओर आपके पास कङ्काने के कपणें थे. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयाहि व सल्लम हमको एक एक कपणा देते थे. (अजू दापूद).

हटीशमें उसकी तशीह नहिं आयी है कि औरतो के कङ्कन में जो तेहजन्त दीया जाये वो कितना लम्बा और यौणा होना चाहिये ? लेकीन ये बात साजीत है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि व सल्लमने अपनी बेटी जेनज (रकी.) के कङ्कनमें अपना तेहजन्त अपनी कमर से जोलंकर दिया था. जिससे मालुम हुआ कि औरतों के तेहजन्त की लंबाई और योहणाई न कटरे तेहजन्त शरई के होना चाहिये. और औरतों का कुर्ता मोढ़े (जमा) से कटम तकका होना चाहिये, और सरजन्त का तुल (लंबाई) और अर्ध (योणाई) धंस कटर होना चाहिये कि औरत का सर साथ उसके बालों के उसमें छुप सके.

(७) औरतों का कङ्काने का तरीका

कङ्काने से पहले मर्दकी तरह औरत के सजदा की जगहों परबीडाकुर मलना चाहिये और हुनुत या धंतर धस्तिमाल करना चाहिये. औरत के सर के बालोंकी तीन चोटीयां बना कर जदन के पीछे डाल देना चाहिये. उम्मे अतीर्या (रकी.) कहती है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि व सल्लमकी बेटी के बालोंकी तीन चोटीयां बनाई और धन चोटीयो को उनके पीछ पीछे डाल दी. (जुजारी)

औरत को पहले तेहजन्त में लपेटे. तेहजन्त को जिन्दा की तरह कमर से न बांधे. बल्के जगलसे लेकर सीना, कमर, रान वगैराह जदनके जिस कटर हिस्सा पर लपेट सके लपेटे, फिर कुर्ता पहनाये, फिर सरजन्त से उसके सर और बालों को छुपाओ, फिर आभिरमे दोनो लीझाईं में लपेट दें.

(८) जनाजा उठानेका और उसके साथ चलने का अयान

अबू हुसैराह (रकी.) से रिवायतहै कि इरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि व सल्लमने मुसलमानों में जाहम

(आपसमें) एक दूसरों पर पांच हक पाण्डव हैं. (१) सलाम का जवाब देना (२) मरीजकी धयाएत करना (३) जनाओं के साथ चलना (४) दअपत कबुल करना (५) छीकने वाले का जवाब देना (जुजारी/मुस्लिम)

अबू हुसैरह (र.क.) से रिवायत है कि इरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लमने जो शफ्स धमान का काम समझकर और सवाब हांसिल करनेकी निश्चयतसे किसी मुसलमान के जनाओं के साथ जाये और बराबर उसके साथ रहे यहाँ तककि उसके जनाओं की नमाज पण्डे और उसके दखन से इरिग हो तो दो कीरात सवाब लेकर लोटेगा, हर कीरात उहद पहाड के बराबर होगा. और जो शफ्स उसके जनाओं की नमाज पण्डेकर दखन से पहले ही लौट आये तो वो एक कीरात सवाब ले कर लौटेगा. (जुजारी/मुस्लिम)

सुब्हानल्लाह ! जनाओं के साथ जाने में कीतना जना सवाब है ! मगर जहोत से मुसलमान अपनी जइलत की पजह से धतने जने सवाब से अपने आप को महेरूम रणते है. जनाआ के साथ जानेवालों को जनाआ के आने पीछे दाने जाये हर तरफ से चलना जायज है.

मुगिरह धन्ने सोअबा (र.क.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लमने इरमाया सवार जनाआ के पीछे चले और पैदल जनाआ के पीछे, आगे, दाने, दाने और उसके करीब करीब चले. (अबु दौद)

हजरत अबु हुसैरह (र.क.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लम इरमाते थे जो शफ्स जनाओं के साथ चला और उसको तीन बार उठाया तो उसने पुरा कीया जो उसके जिम्मे था. (तिरमीजी)

जनाओं को तेज के साथ (जल्दी-जल्दी) ले चलने का हुकम है. हजरत अबु हुसैरह (र.क.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लमने इरमाया जनाओं को लेकर जल्दी चला करे अगर वो नेक है तो तुम उसको ललाध से करीब करते हो, और अगर नेक नहीं है तो बुरे को अपनी गर्दन से उतारते हो. (जुजारी)

जनाळे के साथ औरतो का जाना जाईल नहिं हे. (जुधारी)
जनाळे के साथ चलते पकत कोई कसिमा, दुआ, कुर्आन
मजुद पगैरह पणहना साभित नहिं हे.

जनाळे के साथ आग ले जाना जाईल नहिं हे. (धन्नेमाण)
जो लोग जनाळे के साथ जाये उन लोगो को याहीजे की
जब तक जनाळा कन्धो पर से जमीन पर न रफ्फा जाये तब
तक न जैहे.

हजरत अबु सईद जुदरी (रजि.) से रिवायत है कि
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लमने इरमाया कि जब
तक तुम लोग जनाळा के साथ चलो तो न जैहो यहाँ तक कि
जनाळा रफ्फा जाये. (या'नी कन्धो से जमीन पर रफ्फा जाये)
(जुधारी/मुस्लिम).

हजरत जाबिर (रजि.)ने कहां अक जनाळा गुजरा तो
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लम जणे हो गये हम भी
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लम के साथ जणे हो गये
किर हमने अर्क किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व
सल्लम वोह तो यहूदी औरत का जनाळा है आप (स.अ.प.)
ने इरमाया के मौत जलराहटकी चीळ है किर जब तुम जनाळा
देजो तो जणे हो जाओ. (जुधारी/मुस्लिम)

(६) नमाळे जनाळा का जयान

नमाळे जनाळा के वास्ते पुखू ऊर्री है. जैसा कि ओर
नमाळों के लिये ऊर्री है, ओर जिन जिन सूरतों और नमाळों
के वास्ते तयम्मुम करना जाईल है उन्ही सूरतोमें नमाळे जनाळा
के लीयेली तयम्मुम करना जाईल है. जनाळा की नमाळ मस्जिद
में पणहना दुरस्त और जाईल है.

जब सअद धन्ने अजी पककाश (रजि.) का धन्तेकाल हुआ
तो हजरत आईशा (रजि.) ने इरमाया कि उनका जनाळा
मस्जिद में रफो ताकि मैली उन पर नमाळ पणहुं. उस पर
लोगोंने धन्कार किया तो आईशा (रजि.) ने इरमाया अल्लाहकी
कसम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लमने जैकाअ के

दो जेठे सुहेल ओर उसके लाई सहल के जनाउं डी नमाऽ मस्जिद ही मे पणही है. (मुस्लिम)

ईस हदीससे साबित हुआ डी जनाउं डी नमाऽ औरतेली पणह सकती है. ईस हदीससे येनी साइ साबित हुआ डि जनाउं डी मस्जिद मे रजकर उसपर नमाउं जनाऽ पणहना भिला कराहत दुरस्त है बल्के सुन्नत है.

मगर मस्जिद मे नमाउं जनाऽ पणहनेकी आदत नही डालनी चाहिये, बल्के नमाउं जनाऽ के पास्ते मस्जिद के अलावा कोई ओर जगा मुकर्रर करनी चाहिये. जैसे डि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के ऽमाने मे मस्जिदे नभपी के अलावा ऐक भास जगा नमाउं जनाउं के पास्ते मुकर्रर थी.

मरा हुआ जरया पेदा होतो उस पर नमाउं जनाऽ नही पणहनी चाहिये. अगर ङिन्दगी के कुछ आसार पाये जाअे मसलन छीकना, या रोगा या हरकत करना तो उसपर नमाउं जनाऽ पणहनी चाहिये.

हजरत जाभिर (रङि.) से रिवायत है डि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया लणके डी नमाउं जनाऽ न पणहें और न लणका किलीका पारिस होता है और न उसका कोई पारिस होता है, जब तक वो जाद पेदा होने के जोरसे थिल्लावे नही. (तिरमिङी, निसाई, ईब्ने माजा)

(१०) नमाउं जनाऽ पणहने का तरीका

नमाउं जनाऽ पणहनेका तरीका ये है डि मेयत अगर मई होतो ईमाम उसके सरके पास भणा हो. और अगर औरत होतो ईमाम उसकी कमरके पास भणा हो. मुकतदी लोग ईमाम के पीछे सइ बांध कर भणे हों. बेहतर है डि तीन सइ करलें. डिर ईमाम और नमाङोंकी तरह दोनो हाथोंको अपने मोढों या डानो तक उठाये ओर न आपाउं जुलुद कहे "अल्लाहु अकबर". डिर हाथोंको सीने पर बांध ले ओर हुआअे सना जो ओर नमाङोंमे पणही जाती है पणहे, डिर सूरअे शतहा ओर कोई

अेक छोटी सूरह पणहे. फिर न आवाळे बुलुंठ कहे “अल्लाहु अकबर”. फिर दुअे एव्वाहीम पणहे. फिर न आवाळे बुलुंठ कहे “अल्लाहु अकबर” और उन दुआओं मेसे कोए दुआ पणहे जो आगे आ रही हे. फिर नआवाळे बुलुंठ कहे “अल्लाहु अकबर” फिर दावे जावे सलाम करे. मुकतदी लोग ली ठीक एसी तरह करे मगर तकबीर और सलाम न अपाळे बुलुंठ न कहे. यारो तकबीरोमे रइअेयटैन करना डीसी हदीसे मरदूअ सहीहासे साभित नही. हां, हजरत एब्ने उमर (र.क.) और हजरत अब्बास (र.क.) यारो तकबीरो मे रइअेयटैन करते थे ये सनहे सहीह से साभित हे.

अबु गालीब (र.क.) से रिवायत हे कि हजरत अनस (र.क.)ने अेक मर्द के जनाळे डी नमाळ पणही तो उसके सर के पास जणे हुअे और वो जनाळा उठाने के बाद अेक औरत का जनाळा लाया गया तो उस पर हजरत अनस (र.क.)ने जनाळा डी नमाळ पणही तो उसके नीच मे जणे हुअे. हम लोगो मे अलाअ एब्ने क्रियाट आल्पी ली थे. उन्होने जब मर्द और औरत के जनाळे मे जणे होने का इर्क देया तो पूछा डी अय अबु हमउह (अबु हमउह हजरत अनस (र.क.) डी कुन्नियतथी) क्या एसी तरह रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लम मर्द के जनाळे और औरत के जनाळे मे जणे होते थे जहां आप जणे हुअे हे ? हजरत अनस (र.क.)ने जवाब दिया ‘हां’. (तिरमिडी/एब्नेमाज)

समुरह एब्ने जुन्दुब (र.क.) से रिवायत हे कि मेने आं हजरत रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लम के पीछे अेक औरत पर जनाळे डी नमाळ पणही जो निडास मे मर गय थी आप सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लम उसके नीचमे जणे हुअे. (जुभारी)

दोनो हदीसोंसे साइ तोर से साभित होता हे कि मेवत मर्द हो तो एमाम उसके सरके पास ओर औरत हो तो उसके नीचमे डमरके पास जणा हो.

हजरत अबु उमामह (र.क.) से रिवायत हे कि नमाळे जनाळा मे सुन्नत थे हे कि पहेली तकबीरमे सूर: इतिहा

आहिस्ता पणहा जाये. फिर तीन तकबीरे कही जाये और आभिर तकबीर के पकत सलाम देरा जाये (निसाए)

तल्हा एब्ने अब्दुल्लाह एब्ने औइ (र.क.) ने कहा मेने अब्दुल्लाह एब्ने अब्जास (र.क.) के पीछे अेक जनाजे की नमाऒ पणही. उन्होने सूरह इतिहा पणही ओर कहा मेने ये एंसलिये किया ताकि तुम लोग जान लो कि नमाजे जनाऒा में सूरह इतिहा पणहना सुन्नत है. (जुभारी)

अेक रिवायत में है कि उन्होने (या'नी अब्दुल्लाह एब्ने अब्जास (र.क.) सूरह इतिहा ओर अेक सूरात आपाऒ से पणही कि हमने सुनली फिर अब्दुल्लाह एब्ने अब्जास (र.क.) ने कहा कि मेने पुकारकर एंसलिये पणही कि तुमको मालुम हो जाये कि ये सुन्नत है (तयसऒल जारी शर्ह सहीह जुभारी)

हऒरत अबु उमामह (र.क.) ओर हऒरत एब्ने अब्जास (र.क.) की एन एो हदीसोंसे साभित हुआ कि नमाजे जनाऒा में सूरह इतिहा ओर अेक सूराह पणहना आहीये.

(११) नमाजे जनाऒा की दुआओं

हऒरत अबू हुऒैरह (र.क.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब जनाजे की नमाऒ पणहतो तो ये इरमाते,

अल्लाहुम्बिऒरली इध्थिना व मध्थिना पशाहिदीना वनाएभिना व शगीरिना व कबीरिना व ऒकरीना व उन्साना अल्लाहुम्भ मन अहवय तहु भिन्ना इअइथिही अलल एस्लाम वमन तपइक्वतहु भिन्ना इतपइक्वहु अलल एमान अल्लाहुम्भ वा तहरीमना अऒरहु वला तइतिन्ना जआइहु. (अबु टापूह/तिरमिऒी)

तर्जुमा : - या अल्लाह जो हममे ऒिन्दा है ओर जो हममे मुर्दा है ओर जो हममे हाऒिर है ओर जो हममे गाएँज है ओर जो हममे छोटे है ओर जो हममें जणे है ओर जो हममें मर्द है ओर जो हममें औरत है उन सबको जभ्श दे.

या अल्लाह हमसे ज़िन्दगी रफ़े उसको धरलाम पर
ज़िन्दगी रफ़े और ज़िन्दगी तु मोत दे उसको धरमान पर मोत दे.
या अल्लाह हमको धरसके सपाब से महज़म न करना और हमको
उसके बाए इतनामे न डालना.

ओइ धरने मालीक अशरफ़ (रज़ि.) से रिवायत है कि
रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लमने अेक जनाज़ाडी
नमाज़ पण्ही और मेने आपकी दुआ मेंसे ये लइज़ याए रफ़े.

अल्लाहुम्भिकरलहु वरहमहु व आइही वअकु अण्हु व
अइरिम नुसुलहु वपरिसअ् मइअलहु वगिसलहु भिलमाए
परसलअि वल वरइ व नइकिही भिनल जतावा कमा
युनइइस सोभुल अजयअु भिनइइनसि व अइइलहु दारन्
जेरम् भिन दारिही व अहलन् जेरम् भिन अहलिही व अयजन
जेरम् भिन अयजिही व अइजिलहुल जन्नता व अइअहु भिन्
अअभिल् कइि वभिन अअभिन्नार. (मुस्लिम)

तर्जुमा : - या अल्लाह बरशदे उसको ओर रहमकर ओर
आइयत दे उसको ओर उसके गुनाह मुआइ कर ओर उसकी
महेमानी अरखी कर ओर उसकी कइ कुशादा कर ओर उसको
पानी ओर वरइ ओर ओलों से धो दे ओर उसको गुनाहोंसे
साइ करदे जैसे सइए कपणा मैल से साइ हो जाता है. और
उसको घरके बहले उससे बेहतर घर दे और उसके घरपालों से
अरखे घरपाले दें और उसकी जीवी से बेहतर जीवी दे (या
उसके मईसे अरख मई दे) और उसको जन्नत में दाभिल कर
ओर उसको कइके अअाब ओर आगके (जहन्नमके) अअाबसे
पनाहमें रफ़े.

(१२) कइ पर नमाज़े जनाज़ा और गायेजाना नमाज़े जनाज़ा का जयान

जिस मैयत पर जनाज़ा की नमाज़ नही पण्ही गइ और
युंही भिला नमाज़े जनाज़ा के इइन कर दिया गया तो उसकि
कइ पर जनाज़ा की नमाज़ पण्हाना जाइअ और दुरस्त है.

हउरत धरने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि अेक

शाब्द रात को मर गया तो लोगोने उसको रातही को दफन कर दिया, जब सुबह हुई तो लोगोंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को धंस पाकिआकी धत्तेलाअ दी. आपने इरमाया कि मुझे धंसकी जबर देने से तुम लोगों को कीस चीजने रोका ? लोगोंने कहा रात थी और अंधेरी, धंस वजहसे हम लोगोंने आपको तकलीफ देना पसंद नहीं किया, आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उसकी कबर पर तशरीफ ले गये और कब्र पर जनाजे की नमाज पढ़ी, और एक रिपायत में है कि धंने अब्बास (र.क.) ने कहा हम लोगोंने आप के पीछे सड़ बांधी फिर आपने नमाजे जनाजा पढ़ी. (बुजारी)

धंस हदीससे साबित होता है कि जिस मैयत पर नमाजे जनाजा पढ़ी जध है उसकी कब्र पर ली नमाजे जनाजा पढ़ना जाइज है, अगर किसी को नमाजे जनाजा नहीं मीली और बाद दफन के पहोये तो कब्र पर जाकर नमाजे जनाजा पढ़ सकता है.

धंसी तरहा नमाजे जनाजा गायेजाना ली पढ़ सकते है. (मरने वाले का जनाजा सामने न हो और उसकी नमाजे जनाजा पढ़ी जाये उसे गायेजाना नमाजे जनाजा कहते है)

अबु हुदैराह (र.क.) से रिपायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने हमको (हब्शा के बादशाह) नज्जसी के मरने की उस रोज जबर दी जिस रोज पोह हब्शा में मरा. आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया अपने बाध के लीये हुआ करो. और सधट नीज मुसैबने जयान किया कि अबुहुदैराहने कहा कि आं हजरत सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने सहाबा की सड़ बंधपाध धटगाह में और उस पर चार तकबीरे कही (बुजारी).

(१३) कब्र और दफन का जयान

हजरत हिशाम धंने आमीर (र.क.) से रिपायत है कि जिस दिन उहद की लडाइ हुई तो कध एक मुसलमान शहीद हुये और कधअेक ङफ्मी हुये. हुजुर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया भोटो और कुशाट करो कब्रों को और दो-दो,

तीन-तीन आदमीयो को अेक क्ख में द्दन करो, और जो दुर्मान
ज्यादा जानता हो उसको आगे रज्जो. (निसाह - तिरमिळी.)

अेक अन्सारी सहाजी (रज्जि.) कहते हैं कि हम लोग
रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के साथ अेक जनाडे
में गये मैने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को देखा
कि आप क्ख के किनारे पर बैठे क्ख जोदने वालोंको इरमाते थे
पैर की तरफ कुशादा करो, सर की तरफ कुशादा करो. (अजुदाउद.)

एन दोनो हदीसोंसे मअलुम हुआ की क्खको गेहरी, कुशादा
और अरथी तरह जोदना याहीअे, लेकीन हदीस में उसकी
तशरीह नहीं आध है कि कितनी गेहरी और कुशादा होनी
याहीअे.

क्ख दो किरम की जोदी जाती है. अेक 'जगली' और दुसरी
'सन्दुकी'. जगली क्ख उसको कहते हैं जिसमें मैयतके रजनेकी
जगह किण्वाकी दीवारमें जमीनसे लगाकर जोदी जाती है. उसको
अरबीमें 'लहट' केहते हैं. सन्दुकी क्ख उसको केहते हैं. जिसमें
मैयत के रजनेकी जगह नीचमें बनाध जाती है. उसको अरबीमें
'शिक' कहते हैं.

"जगली" और "सन्दुकी" दोनो किरम की क्ख बनाना
जायज है. मगर "जगली" अपला ओर अइजल है.
रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी क्ख "जगली"
बनाध गध थी. हजरत सअद एब्ने पककाश (रज्जि.) ने अपने
मरजुल मौत में वसियत की कि मेरे लिये "जगली" क्ख
बनाना जैसाकि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी
क्ख "जगली" बनाध गध थी. (मुस्लिम)

हजरत अनस एब्ने मालिक (रज्जि.) से रिवायत है कि जब
आं हजरत रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पज्ञात
हुध तो मदीनामें क्ख जोदने वाले दो शज्स थे. अेक "जगली"
बनाता था और दुसरा "सन्दुकी" सहाजाने कहा हम अल्लाह
तआलासे ललाध मांगते हैं और दोनोको बुला लेजते हैं, इर
जो कोध पेहले आवे उसको हम काममें लगा देंगे. (या'नी
क्ख जोदनेमें) आभिर दोनो बुलाअे गये और जगली
क्ख "लहट" जोदने वाला पहले आया तो आप

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके लिये लहदी कब्र जोटी गध थी.
(घंणे माथा)

हजरत अबूबक और हजरत उमर (रही.) के लिये भी जगली कब्र जोटी गध थी.

कब्र जोटने में अहतियात करनी चाहिये. मुटों की हड्डी को टूटनेसे जयाया जाय. जो हड्डी निकले उसको ज हिंजाउते तमाम फिर उसी कब्रमें दफन कर देना चाहिये.

हजरत आइशा (रखि.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया मुटोंकी हड्डीको तोणना ऐसा है जैसा कि छिंटोंकी हड्डी तोणना (अबू दयूद, घंणे माथा) ये रिवायत गधइ है (तेहकीक. अल्लामा अलजानी).

मुटोंको कब्रमें रखने के वास्ते जकदरे जरुरतअ 'दो' या 'तीन' या 'चार' आदमी कब्रमें दाजिल हो सकते हैं. रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की कब्रमें चार आदमी दाजिल हुअे थे. (तलभीस)

औरत की कब्रमें उसके महरम दाजिल होंगे. औरत की कब्र में उसका शौकर भी दाजिल हो सकता है. अगर महरम या शौकर मयजूद न हो तो तज गैर महरम दाजिल हो सकते हैं.

मेवत को कब्रमें 'पाघताना' (पैर) की तरफ से दाजिल करना सुन्नत है. अबु इस्हाक से रिवायत है कि अबुदुल्लाह घंणे खलीद (रखी.)ने मेवतको पाघताना की तरफसे कब्रमें दाजिल किया और कहाकी ये सुन्नत है. (अबुदाउद)

मेवत अगर औरत की है तो कब्रमें दाजिल करने के पकत कब्र पर पर्दा करना चाहिये. और अगर मेवत मर्द की है तो पर्दा नहीं करना चाहिये. इस बारे में कछ रिवायते आध है.

मेवत को जब कब्र में दाजिल कर दे तो कहे 'बिस्मिल्लाही पअला मिल्लति रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम'.

हजरत घंणे उमर (रखि.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया जब तुम लोग मेवतको कब्र में रजो तो कहे 'बिस्मिल्लाही पअला मिल्लति रसुलुल्लाह'. (अबुदाउद/जिसाध)

और अेक रिवायतमें 'बिस्मिल्लाही पअला सुन्नति रसुलुल्लाह'. कहेनाली आया है. मेवत को कब्रमें लिटाकर उसको

किन्नाडी तरङ्ग मुतपञ्चेह (तरङ्ग) करतें और कङ्कनमे जो गीराह (गांठ) टियाथा उसको जोल दे. डीर कर्यी एतों या पाटीया पगैरा से कङ्कनको बंट करतें. रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लमकी लहदको कर्यी एतोंसे बन्ट की गइ थी. एमाम नव्वी ने मुस्लिम की शरहमे लिजाहै कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लमकी लहद नप एतों से बन्ट की गइ थी.

जब कङ्कन बंट हो जाये तो आहिस्ता आहिस्ता सब लोग दोनो हाथोंसे तीन तीन बार मीङ्की दें. आभिर एण्ने रबीआ (र.क.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लमने उस्मान एण्ने मजउन (र.क.) के जनाङ्की नमाज पण्ही और उबकी कङ्कन पर आये ओर तीन बार दोनो हाथोंसे भणे हो कर मीङ्की दी (एरे कुल्नी)

मिङ्की डालते पकत हुआ पगैरा पण्णना किसी सहीह हदीससे साभित नही.

कङ्कनको कोहाने शुतुर (डिंटकी भूँट) की तरह बनाये. डीर कङ्कन पर पानी छीणके. हजरत जाभिर (र.क.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लमकी कङ्कन पर अक मशक पानी छीणका गया था. ओर जिसने पानी छीणका था वो हजरत बिलाल एण्ने रिवाह (र.क.) थे. सस्की तरङ्गसे शुअ करके पेर तक पहुँचाया. (अयहकी)

हजरत उस्मान (र.क.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लम जब टङ्कनसे झरिय होते तो उसपर ठेहरते ओर लोगोंसे इश्माते अपने भाएकि वास्ते हुआये मङ्कुरत करो ओर उसके लिये साभित कटम रहेने का अल्लाह तआला से सवाल करो एंस वास्ते कि एंस पकत एंस से सवाल होगा. (अजू टापूट)

कङ्कनको जयाए उयी नही बनाना चाहिये. रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लमकी कङ्कन झमीन से अक बालिशत उयी बनाए गइ थी.

अजू हयाज असदी (र.क.) से रिवायत है कि वो कहेते हैं कि हजरत अली (र.क.) ने मुजसे इहांकि में तुमको एंस काम पर न लेखुं जिस पर रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयाहि प सल्लमने मुळको लेजा था (वो काम ये है कि) जहां कही कोए

तस्वीर ट्रेजना बस उसे मीटा ही ट्रेना, और जहां कोइ जुलंड कब्र ट्रेजना बस उसे जराजर कर ट्रेना. (मुस्लिम).

(१४) अहले मैयत के वहां जाना लेजने का बयान

अब्दुल्लाह एब्ने जाइर (रजि.) से रिवायत है कि जब जाइरे तथ्यार (रजि.) की शहीद होने की खबर आई (अखबरे मुत्सा) से तो रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लमने इरमाया जाइर के अहलो अयाल के लीये जाना बनाओ. इस वास्ते कि उनको ऐसी खबर मीली है जे उनको जाना बनाने से रोकती है. (अजु टावुट/एब्ने माज)

इस हदीससे मालुम हुआ कि इराजतमन्टों (सजेवाले) और पडोशीयों को याहीये कि मौत के टिन जाना पकाकर अहले मैयत के घर लेजें.

इजरत जरीर एब्ने अब्दुल्लाह (रजि.) इरमाते है की हमलोग मैयत वालों के पास जमा होने ओर उनके लिये जाना बनाने ओर जानेको नीयाहत (नोहा प्यानी) की अेक डिस्म समजते थे. (एब्ने माज) (जैसे मैयत पर नोहा करना हराम है इसी तरह इस्न के जा'ट अहले मैयत के वहां लोगों का जमा होना और जाना जानाभी हराम है.)

इस हदीससे मालुम हुआ कि मौत के टिन इस्नके जाट या मौत से दूसरे, तीसरे या चौथे टिन या किसी ओर टिन अहले मैयतका मौतकी पजहसे जाना पकाना और अहले बिराटरी ओर दोस्त व अहजाज को मिलाना हराम और नाजाइज है ओर दौरे जाहिलियतकी रस्म है.

(१५) तअजियत (तसल्ली ट्रेने) का बयान

मुशीजत वालोंकी तअजियत करना या'नी उनको शज्रकी तल्लीन करना और तसल्ली ट्रेना सुन्नत है. ताअजियतसे अहले मुशीजतके मगमुम (अमजीन) दिलोंको तसल्ली होती है ओर उनको सज्र-प-सुकुन हासिल होता है ओर तअजियत

करने वालों को सवाब मिलता है.

तअक्रियत के वास्ते कोय जास अलझाळ मुकर्रर बहिं है, जैसे अलझाळ होने चाहिये की जिससे रंजो - गम दूर हो, और सन्न-प-तसल्ली हांसिल हो. तअक्रियत के पकत मैयत के हक में हुआ करना ली आया है.

हजरत इतिमा (रजि.) किसी सहाजी (रजि.) के घर तअक्रियत के वास्ते गध थी, जब वापस आघ तो रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कहां गध थी ? हजरत इतिमा (रजि.) ने इरमाया उसके घरवालों के पास गध थी. उनकी मैयत के वास्ते मैने हुआये रहमत की और उनकी तअक्रियत की (अबु दाउद/मअ औनील मअबुद)

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अपनी अक साहबजादी को जब के उनका लणका कळ कर गया था घस तरहा तअक्रियत इरमाघ है कि 'अल्लाह तआलाही काया जो उसने लिया और उसीका है जो उसने दिया और उसके नजदीक हर चीजका पकत मुकर्रर है. पस सन्न करना चाहीये और सवाब हांसिल करना चाहिये (जुभारी/मुस्लिम).

(१५) कझों की क्रियारत का ज्वाब

कझों की क्रियारत करना मर्दों के वास्ते सुन्नत है (मुस्लिम) कझों की क्रियारत घस गर्जसे जाघळ हुघ है कि कझों को टेजकर घन्नत हांसिल हो. अपनी मौत और आभिरत याद आये, आभिरत के सामान का ज्वाब और किंक पेदा हो ओर अपने ओर मुर्दों के वास्ते हुआये इस्तिगजार की जाये.

हजरत अबस (रजि.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया में तुमहें कझों की क्रियारतसे मना करता था लेकिन अब तुम कझोंकी क्रियारत करो क्युंकि कझोंकी क्रियारत टीलको नरम कर देती है. आंजसे आंसु बहाती है, आभिरत को याद दिलाती है.(मुस्नद अहमद)

ओरतो के लीये कझों की क्रियारत करना मना है, आं हजरत सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने कझोंकी क्रियारत डेरने वाली

औरतों पर लअबत की है (तिरमिज़ी/ईब्ने माज़)

क्रियारते कब्रके पास्ते डोघ भास टिन या भास पकत मुक़रर नही है. जब और जिस पकत चाहे टिनको या रातको क्रियारत के लिये कब्रतान जा सकते है. सातिहीन की कब्रों की क्रियारत के पास्ते सहर करना जाघज़ नहिं है, कयुंकि अबूहुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि कजावे न जांघे जाये, या'नी सहर न किया जाये मगर तिन मस्जिदों की तरफ़ मस्जिदे हरम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अकशा. (जुजारी/मुस्लिम)

(१७) कब्रों की क्रियारत के आदाब और दुआओं

बुरैदह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम लोगों को कब्रस्तान में जाने के पकत ये दुआ पण्हने की ताडीह इरमाते थे :

“अस्सलामु अलैकुम अहलदिआरि मीनल मुअमिनीना वल मुस्लिमीना व ईब्ना ईब्नाअल्लाहु भिकुम वाहिदूना नसअलुल्लाह वना व लहुमुल् आदिथह” (मुस्लिम)

तर्जुमा :- मोअमीन और मुस्लीम घरानेके लोगो तुम पर सलाम हो और ईब्नाअल्लाह हमली तुमसे मिलनेवाले है, हम तुमहारे लीये और अपने लीये अल्लाह से आड़ीयत मांगते है.

ईब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है, की कहा उन्होने गुजरे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम मदीनाकी कब्रों पर तो उनके सामने डीया अपना चहेरा और इरमाया “अस्सलामु अलयकुम या अहलल कुबुरी वगदीरुल्लाह लना वलकुम अनतुम सलकुना व नहनु बील असरी.”

तर्जुमा :- सलाम है तुम पर ये कब्रवालो अल्लाह बच्चे हमको ओर तुमको. तुम हमारे पेश भेमा हो (पहेले आ गये हो) हम तुमहारे पीछे है.

क्रियारते कब्र के पकत जणे जणे हुआ करना चाहिये. जेकर हुआ करना साभित नहीं है और हाथ उठाकर हुआ करना साभित है. हजरत आइशा (र.क्रि.) से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लम बकीअ (जन्नतुल बकीअ - मदीनाका कब्रस्तान) में तशरीफ ले गये और ढेर तक जणे रहे फिर तीन जार हुआ के वास्ते हाथ उठाये (मुरिलम)

क्रियारते कब्र के पकत निहायत धजलास के साथ मुटों की मगइरत के वास्ते हुआ करना चाहिये. अगर अरबीमें हुआ याद होतो अच्छी बात है वना अपनी खुजान में हुआ करें.

क्रियारते कुबूर के पकत कब्रको सजदा करना, उसको जोसा देना, उससे मुआनका करना, उसका तपाइ करना, उसके सामने खुकना, उस पर चादर गीलाइ चणहना, कुल चणहाना, मुटोंसे मुराटें ओर हाजते मांगना ये सब जाते हराम ओर ना जाधउ है.

पयगम्बरें ईस्लाम हजरत मुहंमद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लमने अपनी उम्मतको जितनी ताकीदके साथ शिकीयाह कामोंसे दूर रहने की हिदायत इरमाइ थी अइसोस है आपकी नाम लेवा उम्मत उसी कदर मुशिरकाना अकाइद व आमालमें मुन्तेला है और अपने पयगम्बरकी तमाम हिदायतों को छोण यूही है. आप सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लम ने जूले लइउंमें इरमा दिया कि लोगो कान भोलकर सुनलो तुमसे पहली उम्मतके लोगोंने अपने अंजिया और नेक लोगों, अयलिया, सालेहिन की कब्रों को धजादतगाह (मसाजिद) बना लिया था. जबरदार तुम न (उनकी तरह) कब्रोंको मसाजिद (धजादतगाह) बना लेना में तुमको उससे शेकता हुं (मुरिलम)

आप सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लम ने मर्जुल मोत में यहूद-य-नसार के मुसरिकाना अमल पर लाजत इरमाइ जिससे मकसद अपनी उम्मतको उस अमल से बचाना था.

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इररमाया अल्लाह तआला यहूद-य-नसारा पर लाजत इरमाये कि उन्होने अपने अंधिया कि कछोको धनादतगाह बना लीया (मुस्लिम).

ओक और रिपायत मे इरमाया उस कौम (या'नी यहूद-य-नसारा) पर अल्लाह तआला का सप्त गठन नाठिल हुआ जिसने अपने नबीयोकी कछोको सज्दह गाह बना लीया. (मुस्नटे अहमद)

अपनी कछ के मुताअदिलक ली आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अपनी उम्मतकी तंजीह इरमायी (जबरदार कीया) मेरी कछ को धंद मत बनाना (अबु दाउद) या'नी क्रियारत के लीचे धंजतेमाअ न करना जैसा धंद पर धंजतेमाअ करते हो. शाह पलीउल्लाह मुहदीस दहेल्पी (रह.) धंस दहीसकी शरहमे इरमाते है कि धंस इरमानसे दीनमे तहरीक (रदोबदल) के दरपाजे को बंद करना मत्लूब (मकसद) है कि ये उम्मतली यहूद और नसारा की तरह अपने बुखुर्गो की कछो को हज की तरह धंद ही न बना डालें (हुज्जतुल्ला हुल जालेगाह, जिल्द-२).

धंसके अलावा आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अल्लाह रब्बुल आलमीनकी बारगाहमे हुआ इरमाध "अय अल्लाह मेरी कछको पस्न (पुत) बननेसे बचाधयो (कि उसकी परस्तिश की जाय). मालूम हुआ कि किसी कछको पास काबिले तआलीम समजना उसे पत्थर कि भूर्तीयोकी तरह पुत बनाना और समजना है.

(१८) धंसाले सवाबका बयान

मेवत के पास्ते हुआ करना ओर हुआ का नडा उसको पहोचाना कुर्आन मज्द ओर अहादीसे सहीहासे साधित है.

कुर्आनमे है कि "ओर जो लोग उनके जाद आये वोह कहते है ओ हमारे रब बपश दे हमको और हमारे उन लाधयोकी जो हमसे पहले धमान के साथ गुजर गये ओर हमारे दिलोमे धमान वालो के सिचे किना न डाल. ओ हमारे रब जेशक तु महेरजान रहमपाला है "(सूरह हश्म आयत नं. १०)

ईस आयत से मेयत के पारते दुआ करना ओर दुआका नश पहोयाना साबित होता है.

किंदोकी तरफसे मुँडेके लिये जेहतरिन तोहश दुआ है.

अल्लाह के रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया जब ईन्सान मर गया तो उसका अमल जल्म हो गया सिवाय तीन तरीको के, सदकमे जारीया, वो ईल्म जिससे नश उठाया जाये और सालेह औलाद जो उसके लिये दुआ करे.

(मुस्लिम)

ईसी तरह ईजादते मासियाका बी सवाब मेयतको पहोयाना अहादीसे सहीहासे साबित है.

हजरत आईशा (र.क.) से रिवायत है कि अेक शम्सने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे कहा कि मेरी मां अयाजक मर गई ओर मेरा गुमान है कि अगर वो जात करती (जात करनेका मोका मिलता) तो वो सदका करती तो अगर मैं उसकी तरफसे सदका करूं तो उसका सवाब उसको पहोयेगा ? आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया "हां".

(जुजारी/मुस्लिम)

हजरत ईब्ने अब्बास (र.क.) से रिवायत है कि अेक शम्स ने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे कहा के मेरी मां पकात कर गई है अगर मैं उसकी तरफसे सदका करूं तो क्या उसका सवाब उसको पहोयेगा ? आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया "हां". उस शम्सने कहाकि मेरे पास अेक बाग है आपको गयाह रभताहुं कि मैंने उस बागको अपनी मांकी तरफसे सदका कर दिया. (जुजारी)

सअद बिन उब्बारह (र.क.) से रिवायत है कि उन्होंने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे पूछा के मेरी मां का ईन्तकाल हो गया है तो उनके हक में कोनसा सदका अइजल होगा ? आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि "पानी". तो हजरतसअद (र.क.) ने अेक कूपा जूटपाया और अेलान करवा दिया कि ये उम्मे सअद या'नी सअदकी मांके सवाब के लिये है. (निसाई)

माली धंभादत के धंसाले सपाब के वास्ते शरीअत से न कोध जास दिन मुकरर हे और न कोध जास पकत. जब और जिस पकत चाहे मुहँ के वास्ते सदका करे और उनके लिये हुआ प धस्तिगद्दार करे. धंसाले सपाब के वास्ते तीसरे दिन या दसवें दिन या चालीसवें दिन या बरसीके दिन या किसी ओर दिन को मध्सूस करना या हड़ता मे जुमेरात को मध्सूस करना किताबो सुण्णत से साभित नहीं.

धंभादते बदनिय्याह जैसे तिलापते कुआनि, नमाळ, रोळा, तपाङ्, डिङ्को अङ्कार (तरबीह) वगैराह का सपाब मैयतको पहोचना शरीअत से साभित नहीं.

सूरह बकरहकी आभरी आयतमें अल्लाह रब्बुल आलमीन इरमाता है

“अल्लाह तआला किसी शम्सपर उसकी ताकत से बढकर डिम्बेदारीका बोळ नहीं डालता, हर शम्सने जो नेकी कमाई हे उसका इल उसीके लिये हे और जो बदी (धुराई) समेटी उसका पनाल (अजाब) उसीपर है.....” (२ : २८५)

और जो रिवायत धंभादते बदनिय्याह के सपाब के पहोचनेके बारे मे नकलकी जाती हे वोह सबकि सभ ञधङ् हे.

अलबल्ला मैयतकी तरङ्से हज्जे बदल और रमजान के छूटे हूमे रोळे उसके वाली के ज़ुम्मे हे. जो उसे (वाली को) अदा करना चाहीचे.

कुआनि पाङ् की तिलापत बहुत ही नेकी का काम हे ओर उसका बहोत अजरो सपाब हे. भिला सुबाह अगर मरने वाले की अपलाह वगैराह कुआनि पण्हते हे तो झोत शुदा (मरने वाले) को सपाब मिलता हे कि उसने अपनी औलादको अच्छी तरबियत (तालीम) दी वो उसके लिये सदकये जारीचाह हे लेकिन मरने वाले के धंसाले सपाब के लिये किसी घर या मस्जिदमे लोग धङ्के मील कर कुआनि पाङ् पण्हते हे, अक अक सिपारह हर अक के हाथ मे पकणा दिया जाता हे और बस धंटा टो धंटा मे कुआनि पाङ् जल्म हो जाता हे. ये तरीका सुण्णते नबवीसे साभित नहीं.

अल्लाहके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने दीन के

हर मुआमलेमें हमारी रहेनुमाय इरमाय है ओर हर वो चीज जो जन्नत के करीब और जहन्नमसे दूर करती है उस के बारेमें उम्मतको बता दीया है.

सवाल ये है कि क्या सहाबाये किराम के दौरमें किसीबी झोत होने वाले (मरनेवाले) के लिये कुर्आन ज्पानी, जैसेकि आजकल रिवाज चल पडा है, हुय ? क्या मस्जिदे नजवी शरीफमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और आपके सहाबी (रजि.) ने इस तरह बैठकर कुर्आनज्पानी कि? क्या किसी हदीस में उसका सबूत है? या तारीफकी किसी किताबमें ही ठिक है? अगर ऐसा नहीं और यकीनन ऐसा नहीं तो फिर हम ऐसा क्यों करें? हर वो काम बजाहिर कितनाही अच्छा क्यों न नजर आता हो, जिसका सबूत किताबो सुन्नतसे नहो उससे दूर रहेना है और यही दीन है.

(१९) तक्सीमे पिरासत

अगर मैयतने परसामे कुछ माल छोणा है तो सबसे पहले उसके ठिकमा जो कर्क है उसे अटा किया जायेगा और फिर उसीसे तजहीज और तक्सीन किया जायेगा. फिर शरीअत के मुताबिक पसीयत कर्ह माल को अटा किया जायेगा. उसकेबाद बकीया (बचे हुये) माल को पारिसों के दरम्यान किताब-व-सुन्नत के मुताबिक तक्सीम कर दीया जायेगा.

उम्मतने मुस्लिम को याहिये कि शरीअत के मुताबिक मैयत के पारिसों के दरम्यान बटपारा करनेमें किसी किरमकी ताभीर और कोताही न करे क्युंकि इसके बारेमें सप्त पधद (चेतपधी) आध है.

आजिर मे अल्लाह रज्बूल आलमीन से दुआ है कि हम तमाम मुस्लिमानो को हर मसाहलमें सुन्नतने नजवी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुताबिक अमल करनेकी तौफीक अता इरमाये. (आमीन)

पचाबिदु दअवाना अनिसहमु लिल्लाही
रज्बिल आलमीन.

*** ગુજારીશ ***

આ કિતાબ પઠવાવાળાને નમ્ર પિનંતી છે કે તેને તૈયાર કરવામાં જાણે અજાણે કોઈ ભૂલ રહી ગયેલ હોય તો અમને તેની જાણ કરશો જેથી નવી એડીશનમાં સુધારી શકાય અને અલ્લાહ તઆલાથી દુઆ કરશો અલ્લાહ આપણી દરેકની ભુલચુક માફ કરે. આમીન.

આ કિતાબ તૈયાર કરવામાં જે કોઈએ પણ કોઈપણ પ્રકારની મદદ કરી છે અલ્લાહ તેને બહેતર બદલો બંને જહાનમાં આપે. આમીન.

આપના હાથમાં ઈસ્લામીક ઈન્ફોર્મેશન સેન્ટર-ભુજ તરફથી છપાયેલ ચોથી કિતાબ છે. ઈન્શાઅલ્લાહ અમારી નવી છપાવવામાં આવનાર કિતાબનું નામ છે “ગુનાહે કબીરા”. જો આપ પણ આ કિતાબને છપાવવામાં અમને મદદરૂપ થવા માંગતા હો તો આપના તરફથી ૧૦,૨૦,૩૦ કે તેનાથી વધુ કિતાબો છપાવી આ નેકીના કામમાં અમને મદદરૂપ બની શકો છો. કિતાબો છપાવવા સંસ્થાના સરનામે અથવા મો. નં. ૯૮૭૯૬ ૭૧૧૨૩ અને ૭૮૭૪૬ ૫૪૧૧૩ પર સંપર્ક કરવો. જઝાકલ્લાહ ખૈર.

नमाजे मनाजामें सूरह झातिहा

(१) उबादा भिन सामित (रक्ति.) से रियायत हे कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लमने इरमाया “अस शप्सने सूरह झातिहा न पढी उसकी नमाज नही हुध.” (बुजारी/तीर्माअ)

(२) तल्हा भिन अब्दुल्लाह (रक्ति.) कहेते हैं कि मेने हजरत एब्ने अब्बास (रक्ति.) के पीछे ओक ठवाजेकी नमाज पढी आपने सूरह झातिहा पढी ओर कहा की तुम जान लो कि यह सुन्नत हे. (बुजारी/मुस्लिम)

(३) उम्मे शरीफ अन्तारीयाह (रक्ति.) कहेती हैंकि नजी सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लमने हमको नमाजे नमाजामे सूरह झातिहा पढनेका हुकम दिया. (एब्ने माज)

भिस्मिल्लाहिर्हमा निर्दहीम

**कुल्लु मन अलेहा इनिंय प यब्दा यज-हु रबिबत
 मूल जलाति वल्लकराम (सूर : अर रहेमान २१-२७)**

तर्जुमा : हर थीऊ जो धंस जमीनमे है जल्म होनेवाली है और जाकि रहेगी इकत तेरे रबकी जात, जुसुर्गीवाली और अहसान करने वाली.

धन्सान मरनेवाला है और मरनेके बाद उसे यकीनन अल्लाहको पूरी खीदगीका हिसाब देना है. उसे याकिये कि आभिरतकी तैयारी करे. सिई अल्लाहके आदेशों और प्यारे रसूलकी सुन्नत के मुताबिक खिंदगी गुजारे वहां तककि उसका भात्मा मिल जेर हो.

मरनेवाला जब मरजाता है तो दूसरे मुसलमानों पर डिम्भेदारी आवट होती है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लमकी सुन्नतके मुताबिक उसका क्दन द्दन करे. और शुरु से लेकर आभिर तक कोय शिक्र बिदआतका काम न करे.

लेकिन दुःखकी बात है कि आजकल सकरात से लेकर जनाजाकी नमाज, क्दन, द्दन, ताखियत, तकसीमे यिरासत यजेरा यजेरा काम सुन्नतके मुताबिक अदा करने के बदले शिक्र बिदआतसे लष पष रस्मो रिपाजसे किये जाते हैं. गुजराती खजानमे कोय किताब मंऊरे आम पर नऊर नहीं आती जो आम मुसलमानों को धन्सानके जनाये हूये रीतरीपाज और मस्लक से उंचा उछा कर भालीस सुन्नतके मुताबिक अपने मुटोंको क्दन द्दन यजेरा करनेकी राह दिखलावे. धंस कमीको पूरा करनेके लिये हमने मुसलमानोंकी ललाईकी निबतसे धंस किताबयेको साथे करवाया है ताकि पोह मरनेवालेका क्दन द्दन, नमाजे जनाजा यजेरा बिक्कुल प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लमके हुकम, धर्शाद और सुन्नतके मुताबिक करे और धंस बारेमें मौजूदा दौर में पाये जानेवाले अरधस्लामी तरीके और रस्मोको छोड दे.